॥ ॐ दुर्गायै नमः ॥

नवरात्रि व्रत कथा

पूर्ण कथा हिंदी में • फ्री PDF 2026

VH Original · vhoriginal.com

शारदीय नवरात्रि 2026: घटस्थापना 11 अक्टूबर, दशहरा 20 अक्टूबर। कथा पूजा के बाद या रात को परिवार के साथ पढ़ें।

कथा कब और कैसे पढ़ें

स्नान के बाद माँ के सामने दीया जलाएँ। संकल्प लें, फिर यह कथा एक बैठक में पढ़ें। नौ दिनों में एक बार पूरा पाठ काफी है; कई घर अष्टमी या नवमी को विशेष रूप से पढ़ते हैं। कथा सुनाने वाला शांत बैठे, बाकी श्रद्धा से सुनें।

नवरात्रि क्यों मनाते हैं

नवरात्रि का अर्थ है नौ रातें। इन नौ रातों में भक्त माँ दुर्गा के नौ रूपों का स्मरण करते हैं। पुराण-कथा कहती है कि जब अधर्म बढ़ गया और देवता हारने लगे, तब एक ही शक्ति ने अलग-अलग रूप धरकर संसार को संभाला। वही स्मरण इन नौ दिनों का व्रत है।

महिषासुर की कथा

बहुत समय पहले महिषासुर नाम का दैत्य शक्ति पाकर तीनों लोकों में अत्याचार करने लगा। वह भैंस का रूप भी धर लेता था, इसलिए उसे महिषासुर कहा गया। देवताओं की सेना बार-बार हारी। इंद्र का सिंहासन छिन गया। तब ब्रह्मा, विष्णु और शिव की तेज-ज्योति एक जगह मिली। उस ज्योति से माँ दुर्गा प्रकट हुईं — अस्त्र-शस्त्र हाथ में, सिंह वाहन पर।

युद्ध लंबा चला। महिषासुर रूप बदल-बदलकर बचता रहा। आखिर माँ ने उसका अहंकार तोड़ा और अधर्म का अंत किया। भक्त इस विजय को दशहरा या विजयादशमी के रूप में याद करते हैं। नवरात्रि की नौ रातें उसी संघर्ष और साधना की याद हैं।

नौ रूप — नौ रात

घरों की परंपरा में पहली रात शैलपुत्री, फिर ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री का स्मरण होता है। नाम क्षेत्र के अनुसार थोड़े बदल सकते हैं। भाव एक है — माँ के अलग तेज को नौ दिनों में याद करना।

शुंभ-निशुंभ और रक्तबीज

देवी-महात्म्य की दूसरी धारा में शुंभ और निशुंभ नाम के दैत्य आते हैं। उनकी सेना में रक्तबीज था — जिसके खून की एक बूँद से नया योद्धा पैदा हो जाता था। माँ ने काली रूप धरकर उस खून को पृथ्वी पर पड़ने से पहले ग्रहण किया, फिर दोनों दैत्यों का अंत किया। यह कथा सिखाती है कि अधर्म जब बार-बार जन्म ले, तब भी धैर्य और विवेक से काम लेना पड़ता है।

व्रत रखने वाले भक्त की कथा

लोक-परंपरा में एक और कथा प्रचलित है। एक गृहस्थ संकट में था — घर में अशांति, काम रुक गया, मन डरा हुआ। किसी साधु ने कहा कि शारदीय नवरात्रि में माँ के सामने सरल व्रत रखो, सत्य बोलो, एक समय सात्विक भोजन करो, और यह कथा सुनो। उसने नौ दिन वैसा ही किया। कथा कहती है कि माँ ने उसके मन को स्थिर किया और संकट धीरे उतरे।

यह चमत्कार का विज्ञापन नहीं है। कथा का सार यह है कि व्रत बाहरी दिखावा नहीं, संयम और श्रद्धा है।

कथा का फल — मान्यता

भक्त मानते हैं कि नवरात्रि की कथा सुनने-पढ़ने से घर में शांति रहती है और भय कम होता है। यह आस्था का वचन है। बीमारी, मुकदमा या धन-लाभ का वादा कोई वेबसाइट नहीं कर सकती।

॥ इति नवरात्रि व्रत कथा ॥

स्रोत

यह पाठ देवी-महात्म्य / मार्कंडेय पुराण की प्रसिद्ध कथाओं और उत्तर भारत में घर-घर सुनाई जाने वाली नवरात्रि व्रत-कथा के भाव पर VH Original ने अपनी भाषा में लिखा है। किसी प्रकाशक की पुस्तक की नकल नहीं है।

यह कथा हिंदू पुराणों, लोक-परंपरा और घरों में प्रचलित व्रत-कथा पर आधारित है। घटस्थापना, अष्टमी और दशहरा की तिथि आपके शहर के पंचांग से एक दिन आगे-पीछे हो सकती है। यह आस्था का पाठ है — चिकित्सा, कानूनी सलाह या फल की गारंटी नहीं। वेबसाइट इसके उपयोग से होने वाले लाभ-हानि की जिम्मेदारी नहीं लेती।